

डॉ. डेविड टर्नर, मैथ्यू

लेक्चर 11A - मैथ्यू 24:32-25:46: द एस्केटोलॉजिकल डिस्कोर्स

नमस्कार। मैं डेविड टर्नर हूँ। व्याख्यान 11a में आपका स्वागत है, ओलिवेट प्रवचन पर हमारा दूसरा व्याख्यान, जहाँ हम 24:32 से शुरू करते हैं और अध्याय 25 के अंत में प्रवचन के अंत तक आगे बढ़ते हैं।

हमारा पिछला व्याख्यान इस बात पर चर्चा के साथ अचानक समाप्त हुआ कि 24:29 से 31 तक के बारे में प्रीटरिस्ट या फ्यूचरिस्ट सही हैं या नहीं। मुझे ऐसा लगता है कि फ्यूचरिस्ट वहाँ प्रीटरिस्ट से बेहतर हैं, लेकिन कुछ अच्छे विद्वान हैं जो प्रीटरिस्ट दृष्टिकोण रखते हैं, लेकिन स्पष्ट रूप से, मैं कभी भी उस अंश को समझ नहीं पाया। अब हम शायद ओलिवेट प्रवचन के भविष्यसूचक पहलू से आगे बढ़ते हैं, इसके पैरानेटिक या उपदेशात्मक पहलू की ओर, क्योंकि हम 24:32 से 35 में अंजीर के पेड़ के बारे में पैराबोलिक भाषा कहलाने वाली चर्चा शुरू करते हैं।

इस अंश को समझाने के लिए सबसे पहले, इस बिंदु पर, यीशु भविष्यवाणी करने से आगे बढ़कर व्यावहारिक रूप से बोलने लगते हैं। इस बिंदु से, उनका लक्ष्य 24.3 में शिष्यों के प्रश्न का उत्तर देने के लिए अतिरिक्त जानकारी प्रदान करना नहीं है, बल्कि उन्हें दी गई जानकारी के लिए उचित प्रतिक्रिया के बारे में प्रोत्साहित करना है। यह वह नहीं हो सकता है जो शिष्य जानना चाहते हैं, लेकिन यह वही है जो उन्हें जानना चाहिए।

मत्ती 24:32 से 35 दृष्टान्त रूप में मसीह के आगमन की निकटता को व्यक्त करते हैं। यीशु के समकालीन लोग उस प्रक्रिया से परिचित हैं जिसके द्वारा वसंत में अंजीर का पेड़ कलियाँ उगता है, खिलता है, और अंततः गर्मियों में फल देता है, 24:32। इसलिए वह 24:33 में अपने आगमन की तुलना उस प्रक्रिया से करता है। 24:3 में शिष्यों ने जिन संकेतों के बारे में पूछा था, वे वसंत में पेड़ पर कलियाँ उगने से संकेतित हैं, और उनका आगमन गर्मियों में फल लगने से संकेतित है। जब शिष्य वसंत के संकेत देखते हैं, तो वे जानते हैं कि गर्मी निकट आ रही है।

इन बातों की निश्चितता 24:34 और 35 द्वारा रेखांकित की गई है, जो पुष्टि करते हैं कि यीशु के समकालीन लोग इन संकेतों को देखेंगे और यीशु के शब्द हमेशा के लिए भरोसेमंद हैं। आज की तरह सापेक्ष शांति और समृद्धि के दिनों में, यीशु के इन शब्दों को दिल से लगाना मुश्किल है। कोई व्यक्ति रोज़मर्रा की ज़िंदगी के विवरणों और अपने परिश्रम के फल का आनंद लेने में इतना व्यस्त हो सकता है कि वह भूल जाता है कि यह सब अचानक खत्म हो सकता है, 24:37 से 42।

अविश्वासियों का संदेह यीशु के शिष्यों को उनके शब्दों पर संदेह करने के लिए प्रभावित करके समस्या को और भी जटिल बना देता है, 2 पतरस 3:3। लेकिन यीशु के सच्चे अनुयायी यथास्थिति के साथ बहुत सहज होने की हिम्मत नहीं करते क्योंकि यह निश्चित रूप से, यदि शीघ्र नहीं तो, स्वर्ग के राज्य के पृथ्वी पर आने का मार्ग प्रशस्त करेगा। अब, इस अंश को धर्मशास्त्रीय दृष्टि से देखें तो इन आयतों में दो महत्वपूर्ण शब्द हैं जिन्हें स्पष्ट किया जाना चाहिए। सबसे पहले, 24:33

और 34 में इन सभी बातों की अभिव्यक्ति से यीशु का क्या मतलब था ? यह अभिव्यक्ति उन प्रारंभिक संकेतों को संदर्भित करती है जो यीशु के आने की आशा करते हैं, न कि स्वयं आने की।

यह यीशु द्वारा इस्तेमाल की गई दृष्टांतात्मक कल्पना से स्पष्ट है। यदि इन सभी बातों में यीशु का आगमन शामिल होता, तो 24:33 कहता, जब तुम यीशु को आते हुए देखोगे, तो तुम जान जाओगे कि वह निकट है। लेकिन यह एक पुनरुक्ति होगी, एक स्पष्ट कथन जिसे कहने की आवश्यकता नहीं होगी।

यीशु स्पष्ट बातों पर इतना ज़ोर नहीं देंगे और कुछ ऐसा नहीं कहेंगे जो बिना कहे ही समझ में आ जाए। दूसरी ओर, यदि वाक्यांश, ये सभी बातें, केवल प्रारंभिक संकेतों को संदर्भित करती हैं, तो कथन समझ में आता है क्योंकि संकेतों को देखने से पुष्टि होती है कि आगमन निकट है। इन आयतों में दूसरा महत्वपूर्ण शब्द यह पीढ़ी है।

हालाँकि कुछ भविष्यवादी विद्वान तर्क देते हैं कि पीढ़ी शब्द या तो पूरे इज़राइल राष्ट्र को संदर्भित करता है, या फिर उस युगांतिक पीढ़ी को जो यीशु की वापसी के समय जीवित थी, ध्यान दें कि टूसेंट और वाल्वोर्ड जैसे व्याख्याकार अपनी टिप्पणियों में इस दृष्टिकोण को लेते हैं, मैथ्यू द्वारा इस शब्द का उपयोग स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि यीशु अपने समकालीनों के बारे में बात कर रहे थे। अपनी कॉन्कॉर्डेंस निकालिए, इस पीढ़ी शब्द की जाँच कीजिए। मुझे लगता है कि आपको उस निष्कर्ष पर पहुँचना होगा।

विद्वान जो अन्यथा तर्क देते हैं, वे इस पीढ़ी की समझ का विकल्प चुनते हैं, जो मैथ्यू के स्पष्ट उपयोग के विपरीत है, क्योंकि वे यीशु को यह पुष्टि करने से बचना चाहते हैं कि उनका आगमन उनके समकालीनों के जीवन के दौरान होगा। लेकिन अगर यीशु केवल उन प्रारंभिक संकेतों के बारे में बात कर रहे थे जो उनके आगमन का संकेत देते हैं, तो उन्होंने कोई गलती नहीं की। जैसा कि पिछले क्षणों में तर्क दिया गया था, शब्द, ये सभी चीजें, केवल संकेतों को संदर्भित करती हैं, न कि स्वयं आगमन को, और यीशु भविष्यवाणी करते हैं कि उनके समकालीन लोग उन संकेतों को देखेंगे, जिसमें रोमियों द्वारा 70 ई.पू. में मंदिर का विनाश शामिल है।

अब आइए सतर्कता की आवश्यकता पर आगे बढ़ें, जिसे 24:36-51 में दृष्टांतात्मक और उपदेशात्मक रूप से व्यक्त किया गया है। 24:36-51 में, यीशु दृष्टांतात्मक और दृष्टांतात्मक जोर को जारी रखते हैं जिसके द्वारा उन्होंने 24:32 में अपना प्रवचन शुरू किया था। इस अंश के तीन भाग हैं, पहला जोर देता है कि 24:36-42 में यीशु की वापसी का समय अज्ञात है, दूसरा कि शिष्यों को 24:43-44 में यीशु के अप्रत्याशित प्रकट होने के लिए तैयार रहना चाहिए, और तीसरा तर्क देता है कि शिष्यों को 24:45-51 में उनके लौटने तक अपने स्वामी की आज्ञा का पालन करना चाहिए।

पहला भाग नूह के दिनों और अंतिम दिनों के बीच एक सादृश्य खींचता है। 2 पतरस 3 आयत 3-7 की तुलना करें। यह दैनिक जीवन में व्यस्तता के खिलाफ चेतावनी देता है, जो आसन्न ईश्वरीय न्याय को ध्यान में नहीं रखता है।

इसके बजाय, सतर्कता जरूरी है, 24:42. दूसरा भाग एक गृहस्वामी के बारे में दृष्टांत रूप से बात करता है जो नहीं जानता कि उसके घर में चोरी होने वाली है। शिष्यों को स्पष्ट रूप से कहा गया है कि वे गृहस्वामी का अनुकरण न करें, बल्कि यीशु की अप्रत्याशित वापसी के लिए तैयार रहें, 24:44 .

तीसरे भाग में दृष्टांतात्मक कल्पना जारी है, जिसमें घर का मालिक अपने दास को उसकी अनुपस्थिति के दौरान पूरा करने के लिए एक कर्तव्य सौंपता है। दो काल्पनिक परिदृश्य प्रस्तुत किए गए हैं, पहला एक अच्छे दास से जुड़ा है जिसे उसकी वफ़ादारी के लिए पुरस्कृत किया जाता है, 24:47, दूसरा एक दुष्ट दास जिसका दुराचारी व्यवहार 24:50-51 में स्वामी के क्रोध का कारण बनता है। यह कल्पना शिष्यों को चेतावनी देती है कि वे इस धारणा के साथ खुद को पापी जीवन शैली में न फँसाएँ कि यीशु लंबे समय तक वापस नहीं आएंगे।

इस अनुच्छेद के तीनों भाग यीशु के अनुयायियों को उनके लौटने तक सतर्क, तैयार और अपने स्वामी के काम में व्यस्त रहने की आवश्यकता पर जोर देते हैं। मत्ती 25 इस दृष्टांतात्मक और परावर्तनिक जोर को जारी रखेगा। यह स्पष्ट शिक्षा कि यीशु की वापसी अप्रत्याशित होगी, उन लोगों की मूर्खता को उजागर करती है जिनकी युगांतिक सतर्कता दुनिया भर से नवीनतम समाचारों के साथ बढ़ती और घटती है।

कुछ ऐसे सनसनीखेज लोग भी हैं, अगर मैं इस शब्द का इस्तेमाल कर सकता हूँ, जिनकी भविष्यवाणी की धारणा उन्हें दुनिया की घटनाओं, खासकर मध्य पूर्व में हुई घटनाओं की निरंतर जांच करने के लिए प्रेरित करती है, जो दुनिया के अंत का संकेत देने वाली कथित भविष्यवाणियों की पूर्ति की लगभग उन्मत्त खोज में हैं। इस तरह के लोग स्पष्ट रूप से इस धारणा के तहत हैं कि चोर घरों में चोरी करने का प्रयास करते हैं जब मालिक घर पर सभी लाइट और इलेक्ट्रॉनिक अलार्म चालू करके होते हैं। उनकी आवाज़ें इज़रायल और फ़िलिस्तीनियों के बीच तनाव की डिग्री के सीधे अनुपात में बढ़ती और घटती हैं।

लेकिन यीशु के अनुसार, दुनिया में बढ़ते तनाव के क्षण सापेक्ष समृद्धि और शांति के क्षणों की तुलना में मसीह की वापसी की संभावना कम होगी। 1 थिस्स 5:1-3 से तुलना करें। किसी भी स्थिति में, यीशु के शिष्यों को लगातार स्वामी के काम में लगे रहना चाहिए, सतर्कता से उसकी वापसी की प्रतीक्षा करनी चाहिए।

किसी व्यक्ति के परलोकवाद की शुद्धता अंततः उसके नैतिकता का मामला है, न कि किसी व्यक्ति की अटकलें लगाने की क्षमता का। अब, इस अंश के धर्मशास्त्र के संदर्भ में, सबसे पहले, हम इसके क्राइस्टोलॉजी को देखते हैं। जो लोग त्रिएकत्व के शास्त्रीय रूढ़िवादी सिद्धांत को मानते हैं और परिणामस्वरूप, यीशु के बारे में उच्च विचार रखते हैं, उनके लिए इस पाठ से यह जानना आश्चर्यजनक हो सकता है कि उन्होंने दावा किया था कि उन्हें पृथ्वी पर अपने लौटने का समय नहीं पता था।

लेकिन यह पाठ, साथ ही साथ मार्क 13:32 में इसका समानांतर, और प्रेरितों के काम 1:7 में अपने शिष्यों को यीशु की बाद की टिप्पणी, सभी एक ही बात कहते हैं कि केवल पिता ही अपनी गूढ़ सलाह में इस विवरण को रखता है। यीशु के पूर्व अस्तित्व और ईश्वरत्व के प्रकाश में यह कैसे

हो सकता है, यह आसानी से समझाया नहीं जा सकता है। हालाँकि, यह स्पष्ट है कि यीशु के अवतार में उनके दिव्य गुणों के उपयोग की सीमाएँ शामिल थीं।

उदाहरण के लिए, फिलिप्पियों 2:6 से 8। एक इंसान के रूप में, यीशु भूखा, प्यासा और थका हुआ था। मत्ती 4:2 और 21, 18, साथ ही यूहन्ना 4:6 और 19:28 जैसे अंशों पर ध्यान दें।

यीशु को उसकी सेवकाई और उसके चमत्कारों के लिए परमेश्वर की आत्मा द्वारा सशक्त किया गया था। 3:16, 4:1, 12:18, और 28. लूका 3:22, 4:1, 14, और 18, प्रेरितों के काम 10:38, और यूहन्ना 1:32, और 3:34 की तुलना करें।

यीशु के प्रलोभन के बाद, उसे स्वर्गदूतों से अतिरिक्त सेवकाई की आवश्यकता थी। लूका 22:43 की तुलना में मत्ती 4:11। जब यीशु पिता के पास लौटने के बारे में सोच रहा था, तो उसने यूहन्ना 17:1 से 5 में अपने शानदार पूर्व-अवतार विशेषाधिकारों की बहाली के लिए कहा। सुसमाचारी ईसाई इस पाठ के बारे में स्वाभाविक रूप से चिंतित हैं, लेकिन उन्हें यीशु की वास्तविक मानवता पर इसके जोर को सुनना चाहिए, जिसे पॉल ने 1 तीमुथियुस 2:1 से 5 में भगवान और मानवता के बीच एकमात्र मध्यस्थ होने की पुष्टि की थी। जहाँ तक इस मार्ग के युगांतशास्त्र का सवाल है, एक विवरण भविष्यवादी झुकाव वाले सुसमाचारी लोगों के बीच विस्तारित चर्चा के लिए आया है।

यह अलगाव की भाषा है जिसमें एक को लिया जाता है और दूसरे को यीशु के आने पर छोड़ दिया जाता है, 24:40-42। जो लोग चर्च के क्लेश-पूर्व उत्साह के सिद्धांत को मानते हैं, जो क्लेश के बाद यीशु की धरती पर वापसी से अलग है, 24:29, इस बात पर बहस करते हैं कि क्या 24:40-42 में विश्वासियों को धरती से ले जाने और अविश्वासियों को छोड़ने की बात कही गई है। इस मामले पर निष्कर्ष पर पहुंचने में दो तरह की कठिनाई है।

सबसे पहले, यीशु यहाँ ऐसे शब्दों में बात नहीं कर रहे हैं जो क्लेश-पूर्व के उत्साह और क्लेश-पश्चात् पृथ्वी पर आने के बीच के अंतर को दर्शाते हैं, जैसा कि पॉल ने तर्कसंगत रूप से किया है यदि हम 1 थिस्सलुनीकियों 4:3 18 की तुलना 2 थिस्सलुनीकियों 1:6-10 से करें। दूसरा, एक को उठाए जाने और दूसरे को छोड़े जाने की भाषा अस्पष्ट है। नूह की बाढ़ के सादृश्य पर, जो लोग उठाए गए थे वे बाढ़ में बह गए, और जो बचे थे वे जहाज़ में सुरक्षित थे, 24:38-39, 1341 की तुलना करें। लेकिन 2431 की कल्पना में परमेश्वर के चुने हुए लोगों को ले जाना या इकट्ठा करना शामिल है, न कि उन लोगों को जिनका न्याय किया जाना है, इस संबंध में 3:12 पर ध्यान दें।

इस प्रश्न पर समझदारी का बेहतर हिस्सा यह है कि इसे अनुच्छेद के बोझ से एक अप्रतिक्रियाशील विचलन के रूप में माना जाए, जो सतर्कता पर जोर देता है। विडंबना यह है कि इस तरह के मामलों में व्याख्या के लिए एक पांडित्यपूर्ण खोज में पतित होना संभव है जो छात्र को अनुच्छेद की वास्तविक शिक्षा से विचलित करता है। किसी पाठ की पेचीदगियों पर बौद्धिक बहस उसके नैतिक निर्देशों के पालन की कीमत पर नहीं होनी चाहिए।

भगवान न करे कि हम इन विवरणों के बारे में बहस करते हुए इतने चिंतित हो जाएँ कि जब यीशु आएंगे तो हम उनसे मिलने के लिए तैयार न हों। अब, हम 25:1-13 में बुद्धिमान और मूर्ख दुल्हन की सहेलियों के दृष्टांत की ओर बढ़ते हैं। बुद्धिमान और मूर्ख दुल्हन की सहेलियों का दृष्टांत

प्रवचन में आखिरी बार प्रदर्शित करता है कि यीशु की वापसी का समय अज्ञात है। इसकी तुलना 24:3, 36, 39, 42-44, 50 और 25:13 से करें। इस थीसिस को 24:36 में प्रस्तावना के रूप में कहा गया है और फिर 24:37-42 में नूह के दिनों से ऐतिहासिक रूप से चित्रित किया गया है। इसे एक अप्रत्याशित चोर 24:43, एक अच्छे दास 24:45-47 और एक बुरे दास 24:48-51 से भी दृष्टांत रूप में चित्रित किया गया है। मानो इस मुद्दे के ये पिछले प्रदर्शन पर्याप्त नहीं थे, वर्तमान दृष्टांत इसे एक और परिचित क्षेत्र, विवाह रीति-रिवाजों से चित्रित करता है।

शादी की दावत शुरू करने के लिए दूल्हे के तुरंत आने की उम्मीद करते हुए, दुल्हन की पाँच सहेलियों ने मूर्खतापूर्वक अपने दीयों के लिए तेल लाकर रात होने की तैयारी नहीं की, लेकिन पाँच अन्य ने बुद्धिमानी से देरी के लिए तैयारी की। पहले समूह की मूर्खता के कारण वे दूल्हे को देखने से चूक गईं और उन्हें शादी की दावत से प्रतिबंधित कर दिया गया, लेकिन दूसरे समूह की बुद्धिमानी भरी तैयारियों के कारण वे शादी की खुशी में शामिल हो गईं। इस दृष्टांत की व्याख्या अनावश्यक रूप से अत्यधिक रूपक द्वारा जटिल हो गई है।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि पवित्रशास्त्र में अन्यत्र विवाह भोज और दीपक का प्रयोग रूपक के रूप में किया गया है। प्रकाशितवाक्य 1:12 और 13, प्रकाशितवाक्य 19:7 और 9 को देखें। यीशु स्वयं संकेत देते हैं कि कुछ दृष्टांतों की विशेषताओं में वास्तविकता के साथ विस्तृत पत्राचार है, जैसे कि 13:18-23 में बोलने वाले का दृष्टांत, अध्याय 13 के 37-43 में खरपतवार और गेहूँ का दृष्टांत, और 13:49-50 में महाजाल का दृष्टांत। लेकिन वर्तमान दृष्टांत के मामले में, यीशु 25:13 में केवल एक सामान्य निष्कर्ष प्रदान करता है। यीशु इस दृष्टांत की व्याख्या करने में बहुत अधिक विस्तार में नहीं जाता है। इसलिए, यह काफी स्पष्ट लगता है कि यीशु दूल्हा है, जिसका आगमन विलंबित है, और यह कि बुद्धिमान और मूर्ख दुल्हन की सहेलियाँ सतर्क और सुस्त शिष्यों का प्रतीक हैं।

दूल्हे की उम्मीद यीशु के आगमन के लिए सतर्क तैयारी के बिंदु पर पूरी तरह से फिट बैठती है, लेकिन किसी को इस बारे में चिंतित नहीं होना चाहिए कि विश्वासियों का स्वर्गारोहण या यीशु की धरती पर वापसी को ध्यान में रखा जा रहा है या नहीं। न ही किसी को दृष्टांत में तेल को पवित्र आत्मा के साथ पहचानने के सामान्य प्रलोभन में पड़ना चाहिए, या इस बात पर जोर देना चाहिए कि उद्धार एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को हस्तांतरित नहीं किया जा सकता है। शायद इस तरह की अटकलें सुखद बौद्धिक अभ्यास हैं, लेकिन वे 25:13 में पाई जाने वाली नैतिक अनिवार्यता से ध्यान हटाते हैं, जो कि तैयार रहना है।

विडंबना यह है कि इस तरह की धार्मिक खेल-तमाशा उन गतिविधियों के बराबर हो सकता है, जिन्होंने नूह की पीढ़ी को उनके आसन्न न्याय के बारे में जागरूकता से विचलित कर दिया। 24:38 और 29 की तुलना करें। मूर्ख दुल्हन की सहेली की विवेक की कमी उस आदमी की मूर्खता के समान है जिसने अपना घर रेत पर बनाया था, जो यीशु के शब्दों का पालन नहीं करने वाले व्यक्ति को दर्शाता है।

7:24 से 27 में, 24:48 और 25:5 की तुलना से पता चलता है कि इस दृष्टांत का सबक दुष्ट दास के समान ही है। दोनों मामलों में, यीशु की वापसी में कुछ देरी की बात कही गई है, लेकिन देरी के

प्रति दो प्रतिक्रियाएँ विपरीत हैं, और इन विपरीत प्रतिक्रियाओं में एक महत्वपूर्ण सबक है। दुष्ट दास ने स्वामी की वापसी में देरी का गैर-जिम्मेदाराना अंदाज़ा लगाया और स्वामी के जल्दी आने से अप्रिय रूप से आश्चर्यचकित हो गया।

दूसरी ओर, मूर्ख दुल्हन की सहेलियों ने दूल्हे के आने में देरी को कम करके आंका और समय के लिए तैयारी नहीं की। मालिक की वापसी के लिए दुष्ट दास का उदासीन दृष्टिकोण नूह और गृहस्वामी की पीढ़ी के समान है, जिनमें से किसी ने भी किसी समस्या की उम्मीद नहीं की थी, 24:36 से 44। कोई भी सतर्क और तैयार नहीं था।

लेकिन मूर्ख दुल्हन की सहेलियों ने किसी भी देरी की योजना न बनाकर चरम सीमा तक तत्परता बरती। वे अंत तक दृढ़ रहने के लिए तैयार नहीं हैं, जिस पर 10:22, 13:20 और 21, और 24:13 में जोर दिया गया है। इन विपरीत त्रुटियों से, चर्च सीखता है कि वह न तो यह मान सकता है कि यीशु तुरंत वापस आएगा और न ही यह कि वह अंततः वापस आएगा। चर्च को लगातार यीशु की उम्मीद करनी चाहिए, फिर भी उसी समय, उन्हें दृढ़ रहना चाहिए और उन मामलों में भविष्य की सेवकाई के लिए योजना बनानी चाहिए जो देरी से आते हैं।

यदि चर्च को अपने स्वामी की शिक्षा के प्रति वफादार रहना है तो इन दोनों कर्तव्यों को गतिशील तनाव में रखा जाना चाहिए। लूका 12:35 और 36 की तुलना करें। अब हम तीन सेवकों के दृष्टांत की ओर मुड़ते हैं, जिसे कभी-कभी प्रतिभाओं के दृष्टांत के रूप में जाना जाता है।

इस दृष्टांत की संरचना पूरी तरह से सममित है, जैसा कि आप हमारे द्वारा आपके पूरक सामग्रियों के पृष्ठ 44 पर दिए गए चार्ट से देख सकते हैं। हमारे पास तीन चक्र हैं, मुझे लगता है कि आप कह सकते हैं, जिसमें पाँच, दो और एक प्रतिभा वाले सेवकों को पहले उनकी प्रतिभाएँ सौंपी जाती हैं, फिर वे प्रतिभाओं के अपने स्वागत के लिए विभिन्न तरीकों से प्रतिक्रिया करते हैं, और फिर भगवान, स्वामी द्वारा चित्रित, उन्हें प्राप्त प्रतिभाओं के प्रति उनकी प्रतिक्रिया के लिए पुरस्कृत करते हैं। तो, 5:2, 1:5, 2:1, 5:2, और एक सेवक वहाँ तीन बार दोहराए गए समान क्रम हैं।

इनमें से प्रत्येक क्रमिक दृश्य, हालांकि, पिछले वाले से थोड़ा लंबा है, इसलिए वहाँ एक तरह का नाटकीय निर्माण है, जिसमें अंत में दुष्ट दास की सज़ा पर सबसे अधिक जोर दिया गया है। इसलिए, इस दृष्टांत की संरचना काफी दिलचस्प है। इसे देखें और इसे थोड़ा अपने हिसाब से देखें। यदि पिछले दृष्टांत सतर्कता के बारे में थे, तो यह सतर्कता से उत्पन्न होने वाले वफादार प्रबंधन के बारे में है।

इस बार, मुद्दा यह नहीं है कि क्या दास स्वामी की वापसी से आश्चर्यचकित होंगे, बल्कि यह है कि क्या वे उसके संसाधनों के उपयोग में भरोसेमंद होंगे। उनके उपहार उनके कार्यों को आगे बढ़ाते हैं। इस दृष्टांत का एक मुख्य विवरण यह है कि स्वामी ने अपने संसाधनों को दासों को उनकी व्यक्तिगत क्षमताओं के अनुसार सौंपा 25:15.

तीसरे दास को केवल एक तोड़ा मिलता है, इसलिए स्वामी को स्पष्ट रूप से एहसास होता है कि उसके पास पिछले दो दासों की तुलना में कम योग्यता है। लेकिन उसे तोड़े से कुछ कमाना

चाहिए था, और उसने ऐसा नहीं किया। उसे पाँच तोड़े नहीं दिए गए, और उससे पाँच तोड़े कमाने की उम्मीद भी नहीं की गई।

लेकिन उसे कुछ भी कमाने की अनुमति नहीं है। जबकि मूर्ख दुल्हन की सहेलियों को लगता था कि उनका काम जितना आसान था, उससे कहीं ज़्यादा आसान था, आलसी दास को लगता था कि उसका काम जितना मुश्किल था, उससे कहीं ज़्यादा मुश्किल था। ब्लॉमबर्ग ने यह टिप्पणी की।

मुद्दा यह है कि यदि यीशु के अनुयायी उसकी अनुपस्थिति के दौरान उसके प्रति वफादार हैं, तो वे उन अवसरों और क्षमताओं के अच्छे प्रबंधक होंगे जो उसने उन्हें सौंपी हैं। वफादारी के बारे में, 12:42, रोमियों 12:6 और उसके बाद, 1 कुरिन्थियों 4:1 और 2, 7:7, 12:4 और उसके बाद, इफिसियों 4:7 और 8, तीतुस 1:7, 1 पतरस 4:10 जैसे अंशों पर ध्यान दें। सतर्कता के लिए राज्य के काम में प्रयास और सक्रिय भागीदारी की आवश्यकता होती है। शायद यहाँ परिचित कहावत उपयुक्त है।

भगवान के लिए महान चीजों का प्रयास करें, भगवान से महान चीजों की अपेक्षा करें। शिष्यों को अपने प्रभु के संसाधनों के साथ अस्थिर निवेश नहीं करना चाहिए, लेकिन न ही वे अपने आलस्य को इस झूठे बहाने से माफ कर सकते हैं कि उन्हें कोई नुकसान नहीं हुआ है। गारलैंड ने अच्छी तरह से बताया कि जब मसीह वापस आएगा, तो वह यह नहीं पूछेगा कि क्या किसी ने तारीख सही बताई है, लेकिन आप क्या कर रहे थे? अब हम मैथ्यू 25, श्लोक 31 से 46 पर चलते हैं, जिसे अक्सर भेड़ और बकरियों का दृष्टांत कहा जाता है, लेकिन वास्तव में यह दृष्टांत नहीं है, इसे एक दृष्टांत के रूप में बेहतर समझा जा सकता है, शायद अंतिम निर्णय का।

इस प्रकार, यीशु का अंतिम प्रवचन, जैतून का प्रवचन, इसका अंतिम भाग अंतिम निर्णय के रूप में है। यह प्रवचन 24:3 में यीशु के आने के बारे में शिष्यों के प्रश्न से शुरू हुआ, और 25:31 में सभी राष्ट्रों का न्याय करने के लिए उनके आने के साथ समाप्त होता है। लेकिन शिष्यों का प्रश्न मुख्य रूप से यीशु के आने के समय के बारे में था, और यहाँ कोई कालक्रम नहीं है। यह अंश यीशु के आने के महत्व से संबंधित है, न कि उसके समय से।

24:29 से 31 तक की व्याख्या है। 24:29 से 31 में सभी सर्वनाशकारी भाषा और ब्रह्मांडीय कल्पनाएँ हैं। यह अंश बहुत अधिक नीरस या प्रस्तावनापूर्ण तरीके से चीजों का वर्णन करता है।

हालाँकि कुछ लोग मत्ती 25:31 से 46 को एक दृष्टांत के रूप में देखते हैं, लेकिन 25:32बी और 33 में इसके रूपक तत्व पूरे पेरिकोप में विस्तारित नहीं हैं। कोई इस खंड को अर्ध-दृष्टांत के रूप में वर्णित कर सकता है, लेकिन यह राष्ट्रों के न्याय के गद्य वर्णन के रूप में शुरू और समाप्त होता है। इस वर्णन में चार भाग प्रतीत होते हैं, जो 25:31 से 33 में न्याय की स्थापना, 25:34 से 40 में धर्मी लोगों को राज्य में प्रवेश करने का निमंत्रण, 25:41 से 45 में दुष्टों को अनन्त आग में निर्वासित करना और 25:46 में चिआस्टिक निष्कर्ष के बारे में बताते हैं। हमने पूरक सामग्री के पृष्ठ 45 पर दो अलग-अलग तरीकों से आपके लिए इस बहुत अच्छी तरह से सममित रूप से संरचित दृष्टांत को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

पृष्ठ का ऊपरी आधा भाग, एक अधिक सरल रूपरेखा है जो चियास्टिक संरचना को दर्शाता है, और पृष्ठ का निचला आधा भाग सममित तरीके से प्रगति को दर्शाता है जिसमें राजा भेड़ों और बकरियों दोनों के साथ व्यवहार करता है, और फिर निष्कर्ष, जो पहले बकरियों के भाग्य और फिर भेड़ों के भाग्य से संबंधित है, जो समग्र पेरिकोप की मूल चियास्टिक संरचना को दर्शाता है। सामान्य तौर पर, अंतिम निर्णय पर यह अंतिम खंड 24:32 से 25:13 में सतर्कता के पाठों और 25:14 से 30 में विश्वासयोग्यता के पाठों में करुणा का पाठ जोड़ता है। इन्हें पहले से ही यीशु के आगमन के लिए उचित नैतिक प्रतिक्रिया के रूप में शामिल किया गया है, और अब हमने इसमें करुणा को भी जोड़ दिया है।

इसलिए, यदि हम यीशु के आगमन को समझ गए हैं, तो विश्वासियों के रूप में हमारे पास तीन चीजें हैं - सतर्कता, वफादार सेवा, और जरूरतमंदों के प्रति करुणा। इन चीजों के अलावा, यह वास्तव में मायने नहीं रखता कि हम किस प्रकार के युगांतशास्त्रीय सिद्धांत को मानते हैं क्योंकि हम गलत हैं। मैथ्यू में यीशु अपने शिष्यों को सभी लोगों से प्यार करना सिखाते हैं, यहाँ तक कि उनके दुश्मनों से भी।

तुलना करें 5:47 से। लेकिन अपने साथी शिष्यों के लिए विशेष प्रेम और चिंता होनी चाहिए। भ्रमणशील प्रचारकों को विशेष रूप से 25:35 और 36 में वर्णित सेवकाई के प्रकार की आवश्यकता होगी। इसकी तुलना 10:40 और 3.यूहन्ना 5-8 से करें।

लेकिन यह संदेहास्पद है कि क्या यहाँ केवल घुमंतू प्रचारकों को ही ध्यान में रखा गया है। यीशु की पहचान उसके शिष्यों से की जाती है, और वे भी उसके साथ पहचाने जाते हैं। उनके साथ उनके संबंध के कारण उन्हें सताया जाता है।

5:11, 10:18, 22, और 25, साथ ही 23:34 पर ध्यान दें। हम यहाँ उन शब्दों को भी याद करते हैं जो हमारे प्रभु ने शाऊल से पूछे थे, जो प्रेरितों के काम अध्याय 9 में पॉल बन गया था। शाऊल, शाऊल, तुम मुझे क्यों सताते हो? यह देखते हुए कि यीशु खुद को अपने लोगों के साथ इतनी निकटता से पहचानता है। इसलिए, यह काफी संभावना है कि 25:35, और 36 में यीशु के छोटे भाइयों का अभाव यीशु के लिए उनकी गवाही के कारण है। जब कोई यीशु के अनुयायी पर दया दिखाता है, तो एक गहन अर्थ में, वह खुद यीशु पर दया दिखा रहा होता है।

अब इस अंश के बारे में, इसके समग्र अर्थ और इसमें दिए गए कुछ विवरणों की समझ के बारे में वास्तव में कई व्याख्यात्मक प्रश्न हैं। डिस्पेंसेशनलिस्ट तर्क देते हैं कि यह अंश पुनर्जीवित मानवजाति के सामान्य न्याय की बात नहीं करता है, बल्कि उन जीवित राष्ट्रों के न्याय की बात करता है जो मसीह की वापसी पर पृथ्वी पर जीवित हैं। न्याय का मानक क्लेश के दौरान यहूदी बचे हुए लोगों के साथ उनका व्यवहार है।

इस व्याख्या के लिए टूसेंट और वाल्वोर्ड और पुरानी व्यवस्था संबंधी टिप्पणियाँ देखें। इसमें कोई संदेह नहीं है कि इस अंश का संदर्भ और भाषा इस व्याख्या के लिए खुद को उधार दे सकती है, लेकिन यह संदिग्ध है कि यीशु अंत समय में निर्णयों की एक श्रृंखला की आधुनिक व्यवस्था की

तरह सटीक है। एक अधिक व्याख्यात्मक रूप से उन्मुख मुद्दा इन मेरे भाइयों और बहनों में से सबसे कम की पहचान है, जो शाब्दिक रूप से मेरे भाइयों में से सबसे कम होगा।

कुछ लोग इस न्याय के लिए एकत्रित राष्ट्रों को ऐसे मानते हैं जिन्होंने कभी सुसमाचार नहीं सुना और जिनका न्याय उनके पास मौजूद प्रकाश के आधार पर किया जाता है। लेकिन ऐसा लगता है कि यीशु स्वयं 11:27 में इस इच्छाधारी सोच को खारिज करते हैं। जो लोग सामाजिक रूप से उन्मुख सुसमाचार की ओर झुकाव रखते हैं, वे इस अंश को ज़रूरतमंद लोगों पर दया करने की आवश्यकता पर जोर देने के रूप में देखते हैं।

डेली स्टडी बाइबल में बार्कले, बेयर की टिप्पणी, और डेविस और एलिसन सभी इस दृष्टिकोण को अपनाते हैं। यहाँ मदर टेरेसा के अविश्वसनीय बलिदानपूर्ण जीवन को स्वीकार किया जाएगा, जिन्होंने अक्सर इस मार्ग को इसी तरह उद्धृत किया। इसमें कोई संदेह नहीं है कि यीशु के शिष्यों को ज़रूरतमंदों के लिए दया के कार्य करने चाहिए।

इसमें कोई संदेह नहीं है। 9:13 और 12:7 देखें। लेकिन यह संदेहास्पद है कि यहाँ यीशु के छोटे भाइयों की पहचान सामान्य रूप से ज़रूरतमंदों के साथ की जानी चाहिए। डिस्पेंसेशनलिस्ट दृष्टिकोण यह है कि यह अंश यहूदी बचे हुए लोगों के साथ अंतिम समय के क्लेश के दौरान अन्यजातियों द्वारा किए गए व्यवहार की बात करता है, संभवतः इस अंश की बहुत संकीर्ण व्याख्या करता है।

लेकिन यह यीशु में विश्वास और दूसरों के प्रति दया के कार्यों के बीच के संबंध को सही ढंग से समझता है। लेकिन ये सभी दृष्टिकोण इस तथ्य को नज़रअंदाज़ या कमतर आंकते हैं कि मत्ती में, छोटे बच्चे वास्तव में यीशु का सच्चा परिवार हैं। 10:40 से 42 की तुलना करें।

और 12:46 से 50. इसके अलावा, वे इस तथ्य को अनदेखा या कमतर आंकते हैं कि यीशु के भाई आध्यात्मिक रूप से उससे संबंधित हैं। 5:22 से 24.

और श्लोक 47. अध्याय 7, श्लोक 3 से 5:12, 48 से 50. 18:15, 21, और 35.

23:8. 28:10. ये सभी अंश बताते हैं कि यीशु का सच्चा परिवार वे लोग हैं जो उस पर विश्वास करते हैं। इसलिए, कोई भी इन छोटों को आध्यात्मिक रूप से बर्बाद करने की हिम्मत नहीं कर सकता।

18:6. और यदि उनमें से कोई दूसरे के विरुद्ध पाप करता है, तो उसे सच्चे मन से क्षमा कर देना चाहिए। 18:21, और 35. यीशु के समुदाय में, पद और प्रतिष्ठा के लिए संसार की लालसा अनुपयुक्त है, क्योंकि यीशु के सभी शिष्य एक ही परिवार में भाई और, यदि आप चाहें तो, बहनें हैं।

20:20 से 28. और 23:8 से 10. इसलिए, ऐसा लगता है कि मत्ती में यह स्पष्ट है कि यीशु के छोटे भाई ईसाई हैं, शायद सुसमाचार के प्रचारक जो यहाँ न्याय के मानक के रूप में दया को स्वीकार करते हैं।

यह अंश अनन्त दण्ड के सिद्धांत के भयानक मुद्दे पर भी बात करता है। हालाँकि ऐसा लगता है कि खोए हुए लोगों के विनाश का सिद्धांत लोकप्रियता में बढ़ रहा है, 2546 में अनन्त जीवन और अनन्त दण्ड का एक साथ होना इस तरह की धारणा को धार्मिक इच्छाधारी सोच के रूप में प्रस्तुत करता है। खोए हुए लोगों की नियति के बारे में मैथ्यू के विवरण आग के समय की बात करते हैं।

3:12, 13, 40, और 50. 18:8, और 9. 25:41, और 46 देखें। और इसके साथ 2 थिस्स 1:8, 2 पतरस 3:7, और यहूदा 7 की तुलना करें। साथ ही प्रकाशितवाक्य 14:10, 19:20, 20:10, 20:14, और 15, और 21:8 भी देखें। अन्य समयों में, खोए हुए लोगों की नियति को गहरे अंधकार के रूप में बताया गया है।

8:12, 22:13, 25:30 को देखें और 2 पतरस 2:4, यहूदा 6 और यहूदा 13 की तुलना करें। इन दोनों रूपकों में परमेश्वर से हमेशा के लिए अलग होने की भयानक भयावहता को स्पष्ट रूप से व्यक्त किया गया है। अब, जल्दी से सारांश और संक्रमण पर आते हैं।

मत्ती 24 और 25 की व्याख्या करने में आने वाली कठिनाइयाँ ईसाइयों को सीमित मानव होने के नाते उनकी सीमाओं की याद दिलाती हैं। जब समान विद्वत्ता और भक्ति के बाइबल शिक्षक किसी अंश के विवरण पर सहमत नहीं हो पाते हैं, तो व्यक्ति को हठधर्मिता से दूर रहना चाहिए और आगे के निर्देश के प्रति खुला दिमाग रखना चाहिए। मत्ती 24, 25 स्पष्ट रूप से दिखाता है कि बाइबल की भविष्यवाणी केवल भविष्यवाणी या भविष्य कथन नहीं है।

केवल 24:4 से 31 ही भविष्य के बारे में शिष्यों के प्रश्न का सीधे उत्तर देते हैं, और यहाँ तक कि भविष्यवादी खंड भी नैतिक आज्ञाकारिता की आवश्यकता पर जोर देता है। यीशु के पहले चार प्रवचनों में से प्रत्येक में युगांतशास्त्र पर जोर दिया गया है, इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं है कि यीशु ने मत्ती में अपनी सारी शिक्षाओं को युगांतशास्त्र के साथ समाप्त किया। जब यीशु अपने सभी शब्दों को समाप्त करता है, तो वह उस शिक्षा को समाप्त कर देता है जिसे वह अपने शिष्यों को पृथ्वी के सभी राष्ट्रों के अपने साथी अनुयायियों में बनाए रखने और उन्हें सिखाने की आज्ञा देता है।

इस शानदार शिक्षा के अब समाप्त होने के साथ, घटनाएँ तेज़ी से आगे बढ़ेंगी और 26:2 में उसे क्रूस पर चढ़ाया जाएगा। वह अपने लोगों को उनके पापों से बचाने और अपने लहू में नई वाचा का उद्घाटन करने के लिए बहुतों के लिए छुड़ौती के रूप में अपना जीवन देगा।